The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा: पिंगल शास्त्र के आलोक में एक सांस्कृतिक विश्लेषण (रागणी 1–7 के संदर्भ में)

आनन्द कुमार आशोधिया
शाहपुर तुर्क, जिला सोनीपत, हरियाणा, पिन 131001, ashodhiya68@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19542794

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-03-2026

Published: 10-04-2026

Keywords:
रागणी, हीर–राँझा, हरियाणवी लोक-साहित्य, पिंगल शास्त्र, प्रेम, सामाजिक संघर्ष

ABSTRACT

यह आलेख हरियाणवी लोक-साहित्य की प्रमुख विधा *रागणी* के माध्यम से अमर प्रेम कथा *हीर–राँझा* के प्रारंभिक चरण का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। रागणी 1 से 7 तक के आधार पर यह अध्ययन प्रेम, सामाजिक संघर्ष, सांस्कृतिक संरचना और कलात्मक अभिव्यक्ति के अंतर्संबंधों को उजागर करता है। पिंगल शास्त्र के छंद-विधान, मात्रा-संतुलन और ध्वन्यात्मक सौंदर्य के आधार पर रचनाओं का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि हरियाणवी रागणी परंपरा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक विमर्श, सांस्कृतिक स्मृति और भावनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

भूमिका

भारतीय लोक-साहित्य में *हीर–राँझा* की कथा प्रेम, त्याग और सामाजिक संघर्ष का शाश्वत प्रतीक रही है। यह कथा केवल पंजाब तक सीमित नहीं रही, बल्कि हरियाणवी लोक-संस्कृति में भी रागणी के रूप में गहराई से रची-बसी है।

हरियाणवी रागणी परंपरा में कथा केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करती, बल्कि समाज की मानसिकता, संबंधों की जटिलता और व्यक्ति की आंतरिक संवेदनाओं को भी अभिव्यक्त करती है। प्रस्तुत आलेख में रागणी 1 से 7 तक के माध्यम से राँझा के जीवन के उस चरण का अध्ययन किया गया है जहाँ वह पारिवारिक संरक्षण से सामाजिक संघर्ष और अंततः प्रेम की ओर अग्रसर होता है।

हीर–राँझा और हरियाणवी रागणी परंपरा

हरियाणवी रागणी लोक-गायन की एक विशिष्ट शैली है, जिसमें कथा, संगीत और छंद का अद्भुत संयोजन मिलता है। यह परंपरा मुख्यतः मंचीय प्रस्तुति, लोक-गायन और सामाजिक आयोजनों के माध्यम से जीवित रही है।

हीर–राँझा की कथा जब हरियाणवी रागणी में रूपांतरित होती है, तो उसमें स्थानीय जीवन, भाषा, प्रतीक और सामाजिक संदर्भ जुड़ जाते हैं। उदाहरणतः—

- खेत, पशुपालन, चूरमा, घूँघट
- पारिवारिक संरचना (भाई-भाभी, चाचा)
- सामाजिक मर्यादा और प्रतिष्ठा

ये सभी तत्व कथा को स्थानीय बनाते हुए उसे अधिक जीवंत और प्रासंगिक बनाते हैं।

रागणी 1–3: बाल्यावस्था से आत्म निर्णय तक

प्रारंभिक रागणियों में राँझा का बाल्यकाल, उसका संगीत-प्रेम और पारिवारिक स्थिति का चित्रण मिलता है।

> "भाई कहते इब स्याणा होग्या खेती में ले हाथ बंटा
> … बाँसुरी तै प्रीत लगाकै धुन की लहरी बजैं तमाम"

यहाँ राँझा एक ऐसे कलाकार के रूप में उभरता है जो कृषि-प्रधान समाज में असंगत प्रतीत होता है। पिता की मृत्यु के बाद उसकी स्थिति और भी दयनीय हो जाती है—

> "बाबू के आँख मीचते ही, राँझे का लुटग्या सुख चैन"

रागणी-2 में सामाजिक ताने और उपेक्षा का चित्रण है—

> "कामचोर निकम्मा होग्या…"

यह केवल पारिवारिक आलोचना नहीं, बल्कि उस समाज की मानसिकता का प्रतिबिंब है जो कला को श्रम के समकक्ष नहीं मानता।

रागणी-3 में राँझा का घर छोड़ना एक निर्णायक मोड़ है। यह यात्रा केवल भौतिक नहीं, बल्कि आत्मिक भी है—
यहाँ से कथा प्रेम की ओर अग्रसर होती है।

रागणी 4–5: प्रथम मिलन और सामाजिक स्वीकृति का प्रयास

रागणी-4 में हीर और राँझा का प्रथम मिलन अत्यंत भावनात्मक और नाटकीय है—

> "पहली नजर में दिल दे बैठी…"

यह दृश्य नारी मन की जटिलता को दर्शाता है—गुस्सा, आकर्षण और प्रेम का मिश्रण।

रागणी-5 में हीर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। वह राँझा को अपने पिता के यहाँ काम दिलवाती है—

> "तूँ चाहवै तै इस छोरे नै दे किसे काम पै ला…"

यहाँ प्रेम प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवहार के भीतर छिपा हुआ है। राँझा का प्रेम अब श्रम में परिवर्तित हो जाता है—यह परिवर्तन उसे समाज के भीतर स्वीकार्यता दिलाता है।

रागणी 6–7: प्रेम का विस्तार और सामाजिक संघर्ष

रागणी-6 में प्रेम अपनी परिपक्व अवस्था में पहुँचता है—

> "एक हाथ में दूध का लोटा चूरमा थाळी सिर धर रही…"

यह दृश्य नारी की सेवा-भावना और प्रेम की गहराई को दर्शाता है। यहाँ प्रेम केवल भाव नहीं, बल्कि समर्पण बन जाता है।

परंतु रागणी-7 में यह प्रेम सामाजिक संघर्ष का रूप ले लेता है।

> "तेरी हीर चिलत्तर कर रही…"

चाचा कैदू का पात्र समाज की उस दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रेम को प्रतिष्ठा के विरुद्ध मानता है।
यहाँ से कथा में संघर्ष का आरंभ होता है—

- प्रेम बनाम समाज
- व्यक्ति बनाम परंपरा
- भावना बनाम मर्यादा

पिंगल शास्त्र के अनुसार छंद विश्लेषण

इन रागणियों में पिंगल शास्त्र के छंद-विधान का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **सममात्रिक छंद:** अधिकांश पंक्तियाँ 14–16 मात्राओं के बीच
- **यति:** 8–8 मात्रा पर स्वाभाविक विराम
- **तुकांत:** ध्वनि-संतुलन (जैसे—धर रही / भर रही / मर रही)
- **अनुप्रास:** ध्वन्यात्मक सौंदर्य (जैसे—"मटकै–झटकै")

यह छंद संरचना रागणी को मंचीय प्रस्तुति के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाती है।

भाषिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ

1. लोक-भाषा का प्रयोग

"खा कै रोटी", "डांगर", "चूरमा" जैसे शब्द ग्रामीण जीवन की सजीवता प्रस्तुत करते हैं।

2. प्रतीकात्मकता

- बाँसुरी ⟶ आत्मा की अभिव्यक्ति
- बंजर भूमि ⟶ उपेक्षा
- चूरमा ⟶ प्रेम और सेवा

3. भावात्मक विविधता

- करुणा (रागणी 1–2)
- प्रेम (रागणी 4–6)
- संघर्ष (रागणी 7)

4. नारी दृष्टिकोण

हीर का चरित्र केवल प्रेमिका नहीं, बल्कि निर्णायक और संवेदनशील नारी के रूप में उभरता है।

सामाजिक विमर्श

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि रागणी केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचना का दर्पण भी है।

प्रमुख प्रश्न:

- क्या समाज कलाकार को स्वीकार करता है?
- क्या प्रेम सामाजिक मर्यादा से ऊपर हो सकता है?
- क्या नारी की स्वतंत्रता मान्य है?

रागणियाँ इन प्रश्नों का प्रत्यक्ष उत्तर नहीं देतीं, बल्कि उन्हें जीवंत रूप में प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष

रागणी 1–7 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हीर–राँझा की कथा हरियाणवी लोक-संस्कृति में केवल प्रेम कथा नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श का सशक्त माध्यम है।

राँझा का संगीत-प्रेम, हीर का समर्पण, और समाज का विरोध—ये तीनों तत्व मिलकर एक ऐसी कथा रचते हैं जो आज भी प्रासंगिक है।

पिंगल शास्त्र के छंद-विधान और लोक-भाषा की सहजता इस परंपरा को और भी प्रभावशाली बनाते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि हरियाणवी रागणी परंपरा भारतीय लोक-साहित्य की अमूल्य धरोहर है, जो भाव, भाषा और समाज के अद्भुत समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

संदर्भ (References)

1. आशोधिया, आनन्द कुमार।
   हीर राँझा — हरयाणवी लोक रागणी संग्रह (पिंगल समीक्षा सहित)।
   Sjain Publication, अगस्त 2025।

2. पिंगल शास्त्र (परंपरागत छंद शास्त्रीय ग्रंथ)

3. हरियाणवी लोक-साहित्य एवं रागणी परंपरा से संबंधित सामान्य अध्ययन स्रोत